



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
२०२१ मार्च	७.६.२१	२	३-६

पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है, जिससे बाढ़, सूखा और ओलावृष्टि होती है, बचने के लिए पौधे लगाएः वीसी एचएयू में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में ऑनलाइन संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने रखे विचार

भास्कर न्यूज़ | हिसार

एचएयू द्वारा विकसित विभिन्न कृषि तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, फसल अवशेष प्रबंधन, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। यह विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कृषि मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्त्वावधान में ऑनलाइन बेब संगोष्ठी को बताएँ मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ोतारी हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप असमय अधिक बारिश, तेज हवाएं चलना, ओलावृष्टि, सूखा, बाढ़, जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन चरम

पर हैं इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक कृषि तकनीकें व मौसम आधारित कृषि सलाह अपनाकर तथा अधिकाधिक पौधे लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। आज इसान आधुनिकता की दौड़ में विकास के नाम पर सबसे 'ज्यादा नुकसान पर्यावरण को ही पहुंचाता है। मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन से शुद्ध हवा की मात्रा में गिरावट, जल स्तर में बदलाव, हिम पिघलना, नये-नये कीटों का आक्रमण, वनों के क्षेत्रफल में कमी तथा वन्यजीवों की जनसंख्या धीरे धीरे कम होना इत्यादि प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल ढोगड़ा, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. एके छावड़ा सहित विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता, निदेशक, विभागाध्यक्ष, किसानों व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन माध्यम से हिस्सा लिया।



कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्यातिथि एचएयू के वीसी व अन्य।

विभिन्न बीमारियों से होने वाली मौतों में एक तिहाई के लिए वायु प्रदूषण जिम्मेदार : डॉ. सतीश

डॉ. यशवंत सिंह परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नोनी सोलन हिमाचल प्रदेश के पर्यावरण विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सतीश भारद्वाज ने बताया कि हृदयघात, श्वसन संबंधी बीमारियों, फैफड़ों के कैंसर के कारण होने वाली कुल मौतों में से एक तिहाई के लिए वायु प्रदूषण जिम्मेदार है। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढांडा ने इस कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन पर विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एल. खिचड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

ग्रेहू के जीवनचक्र में बदलाव : डॉ. राठौड़

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पर्व महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने बताया कि स्वस्थ जीवन के लिए शुद्ध हवा, पानी व भोजन आवश्यक होते हैं, जो पर्यावरण संरक्षण द्वारा ही संभव है। तापमान में अत्यधिक वृद्धि होने से गेहूं की फसल के जीवनचक्र में बदलाव देखने को मिला है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब १८४	७-६-२१	५	३-४

‘आधुनिक कृषि तकनीक अपनाकर कर सकते हैं पर्यावरण संरक्षण’

हिसार, ६ जून (पंकेस): को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न विधितकनीकों जैसे जीरोटिलेज, फसल अवशेष प्रबंधन, कृषि बानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है।

ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा है। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कृषि मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निदेशालय के सयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन वेब संगोष्ठी दिखाई दे रहे हैं।



कार्यक्रम में संबोधित करते मुख्यातिथि कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज व मौजूद अन्य।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पीनी जागरूकता	७.६.२१	३	१-२

सांकेतिक समाचार

आधुनिक कृषि तकनीकें अपनाकर कर सकते हैं पर्यावरण संरक्षण
हिसार : विश्वविद्यालय द्वारा विकासित विभिन्न कृषि तकनीकों जैसे जीरो टिलोज, फसल अवशेष प्रबंधन, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा

कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कृषि मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्वावधान में ३०८ लाइन वेब संगोष्ठी को बतार मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जिसके कुलपति ग्रो बीआर काम्बोज। परिणामस्वरूप असमय अधिक बारिश, तेज हवाएं जागरण आकाशव चलना, ओलागृष्टि, सुखा, बाढ़, जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन घर पर हैं इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक कृषि तकनीकें व मौसम आधारित कृषि सलाह अपनाकर तथा अधिकाधिक पेड़ लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। कार्यक्रम के समाप्ति अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. एम.एल. खिचड़ ने सभी का आभार व्यक्त किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

सम्मान पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैरेस ऑफिस	७-६-२१	९	३५

आधुनिक कृषि तकनीकों से कर सकते पर्यावरण संरक्षण

हिसार। विभिन्न कृषि तकनीकों जैसे जीरोटिलेज, फसल अवशेष प्रबंधन, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कृषि मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निवेशालय के संयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन वेब संगोष्ठी को बताएँ मुख्यातिथि सभाधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ोत्तरी हो रही है, जिससे असमय अधिक बारिश, तेज हवाएं चलना, ओलावृष्टि, सूखा, बाढ़ जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन चरम पर हैं इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक कृषि तकनीक तथा मौसम आधारित कृषि सलाह अपनाकर तथा अधिकाधिक पेड़ लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। आज इसान आधुनिकता की दौड़ में विकास के नाम पर सबसे ज्यादा नुकसान पर्यावरण को ही पहुंचाता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार ३३ -४१	6.06.21	---	

हिसार, सोमवार, 07 जून 2021

3

आधुनिक कृषि तकनीकें अपनाकर कर सकते हैं पर्यावरण संरक्षण : प्रो. काम्बोज

एचएयू में पर्यावरण दिवस पर वेबिनार का आयोजन, पौधारोपण भी किया

टुडे न्यूज़ | हिसार



विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न कृषि तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, फसल अवशोष प्रबंधन, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कृषि मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन वेब सेमेंटी को बताए मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पृथ्वी का तापमान लगातार बढ़ोतरी हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप असमय अधिक बारिश, तेज हवाएं चलना, ओलावृष्टि, सुखा, बाढ़, जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन चरम पर हैं इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए

आधुनिक कृषि तकनीकें व मौसम स्वस्थ जीवन के लिए शुद्ध हवा, आधारित कृषि सलाह अपनाकर तथा अधिकाधिक पेंड लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। आज इसका आधुनिकता की दौड़ में विकास के नाम पर सबसे 'यादा नुकसान पर्यावरण' को ही पहुंचाता है। मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन से शुद्ध हवा की मात्रा में गिरावट, जल स्तर में बदलाव, हिम पिघलना, नद्य-नद्ये कीटों का आक्रमण, वनों के क्षेत्रफल में कमी तथा बन्यजीवों की जनसंख्या धीरे धीरे कम होना इत्यादि प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। कार्यक्रम में मूख्य बक्ता पूर्व महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़ ने बताया कि



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
125 ईप्टर	6.06.21	---	

हृदयाधात, श्वसन संबंधी बीमारियों, फेफड़ों के कैंसर के कारण होने वाली कुल मौतों में से एक तिहाई के लिए वायु प्रदूषण जिम्मेदार: डॉ. भारद्वाज

हिसार/06 जून/रिपोर्टर

विश्वविद्यालय द्वारा विकसित विभिन्न कृषि तकनीकों जैसे जीरो टिलेज, फसल अवशेष प्रबंधन, कृषि वानिकी, जल प्रबंधन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा। वे विश्वविद्यालय में विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में कर्ता मौसम विज्ञान विभाग व विस्तार शिक्षा निदेशालय के संयुक्त तत्वावधान में ऑनलाइन बैच संगोष्ठी को बताएँ मुख्यातिथि संचारेति कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पृथ्वी का तापमान में लगातार बढ़ती ही हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप असमय अधिक बारिश, तेज हवाएँ, चलना, आलाचूलि, सूखा, बाढ़, जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन चरम पर हैं। इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक कृषि तकनीकों व मौसम आधारित कृषि सलाह अपनाकर तथा अधिकाधिक पेड़ लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। आज

इसन आधुनिकता की दौड़ में विकास के नाम पर सबसे ज्यादा नुकसान पर्यावरण को ही पहुंचाता है। मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन से शुद्ध हवा की मात्रा में गिरावट, जल स्तर में बदलाव, हिम पिछलन, नये-नये कीटों का आक्रमण, वनों के क्षेत्रफल में कमी तथा वन्यजीवों की जनसंख्या धीरे-धीरे कम होना इत्यादि प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता पूर्व महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) डॉ. लक्ष्मण सिंह राठौड़ ने बताया कि स्वस्थ जीवन के लिए शुद्ध हवा, पानी व भोजन आवश्यक होते हैं, जो पर्यावरण संरक्षण द्वारा ही संभव है। तापमान में अत्याधिक बढ़ि होने से गेहूं की फसल के जीवनचक्र में बदलाव देखने को मिला है। तापमान व वर्षा की प्रवृत्ति में बदलाव के चलते न सिर्फ खेती प्रभावित होगी बल्कि इसका गश्टीय खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव भी देखने को मिल सकता है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण ही हाल ही में यास व ताऊते जैसे भीषण तूफानों का सामना करना पड़ा ब्योरों का समुद्र का तापमान सामान्य से लगातार अधिक हो रहा है और भविष्य में

भी ऐसी समस्याएं आने की संभावनाओं से इकान नहीं किया जा सकता। डॉ. यशवंत रिह परमार उद्यानिकी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नोनी सोलन हिमाचल प्रदेश के पर्यावरण विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. सतीश भारद्वाज ने बताया कि हृदयाधात, श्वसन संबंधी बीमारियों, फेफड़ों के कैंसर के कारण होने वाली कुल मौतों में से एक तिहाई के लिए वायु प्रदूषण जिम्मेदार है। वायु प्रदूषण जलवायु को भी प्रमुखता से प्रभावित करता है, जिसका दुष्प्रभाव स्तर पृथ्वी की कार्यप्रणाली पर परिलक्षित होता है। उन्होंने किसानों से जैविक खेती को अपनाने का आहवान किया तथा वैज्ञानिकों से कम खाना व पानी से अधिक पैदावार देने वाली फसलों की उन्नत किस्में विकसित करने की आपील की। विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रमनिवास दांडा ने कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम के समाप्त अवसर पर विभागाध्यक्ष डॉ. एमएल खिचड़ी ने सभी का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कुलपति के ओएसडी डॉ. अतुल दंगड़ा, कृषि महाविद्यालय अधिष्ठाता डॉ. एके छावड़ा आदि मौजूद रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नव छोरे हिमा इमर	6.06.21	---	

आधुनिक कृषि तकनीकें अपनाकर कर सकते हैं पर्यावरण संरक्षण : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज



हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : विश्वविद्यालय द्वारा विकसित कृषि तकनीकों जैसे जीरो टिलोज, फमल अवशेष प्रबन्धन, कृषि वानिकी, जल प्रबन्धन आदि को अपनाकर पर्यावरण संरक्षण किया जा सकता है और साथ ही फसलों का उत्पादन भी बढ़ाया जा सकता है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहे। वे

तत्त्वावधान में ऑनलाइन वेब संगोष्ठी को बताएं मूल्यांतिक्ष मंबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पूर्वी का तापमान लगातार बढ़ोतारी हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप असमय अधिक बारिश, तेज हवाएं चलना, ओलावृष्टि, सुखा, बाढ़, जैसे मौसम संबंधी परिवर्तन चरम पर हैं। इनका स्पष्ट प्रभाव फसलों के उत्पादन पर दिखाई देता है। इसलिए आधुनिक कृषि तकनीकों का मौसम आधारित कृषि सलाह

दिवस के अपनाकर तथा अधिकाधिक पेड़ लगाकर इन समस्याओं से निजात मिल सकती है। आज इसन आधुनिकता की दौड़ में विकास के नाम पर सबसे ज्यादा नुकसान पर्यावरण को ही पहुंचाता है। मौजूदा समय में जलवायु परिवर्तन से शुद्ध हवा की मात्रा में गिरावट, जल स्तर में बदलाव, हिम पिछलना, नद्ये-नद्ये कीटों को आक्रमण, वनों के क्षेत्रफल में कमी तथा बन्धवीजों की जनसंख्या धीरे धीरे कम होना इत्यादि प्रभाव स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं।

तापमान बढ़ोतारी से गेहूं के जीवनचक्र में आया बदलाव : डॉ. राठौड़ कार्यक्रम में मुख्य बका पूर्व महानिदेशक भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) डॉ. लक्ष्मण

एचएयू में पर्यावरण दिवस पर वेबिनार का आयोजन, पौधारोपण भी किया

सिंह राठौड़ ने बताया कि स्वस्य जीवन के लिए शुद्ध हवा, पानी व धोजन आवश्यक होते हैं, जो पर्यावरण संरक्षण द्वारा ही संभव है। तापमान में अत्याधिक वृद्धि होने से गेहूं की फसल के जीवनचक्र में बदलाव देखने को मिला है। तापमान व वर्षा की प्रवृत्ति में बदलाव के चलते न सिर्फ खेती प्रभावित होगी चलिक इसका राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा पर प्रभाव भी देखने को मिल सकता है। इसके अलावा जलवायु परिवर्तन के प्रभाव के कारण ही हाल ही में यास व ताऊते जैसे भीषण तुफानों का सामना करना पड़ा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्म	6.06.21	---	

एचएयू में स्क्रीन पर किसानों ने देखा पीएम का कार्यक्रम, वितरित किए गए पौधे



सिटी पल्म न्यूज, हिसार। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के ऑनलाइन कार्यक्रम को एचएयू में किसानों ने स्क्रीन के माध्यम से देखा। इसके लिए इंडियन ऑयल व एचएयू के संयुक्त तत्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभागार में बड़ी स्क्रीन लगाकर कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज, विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. रामनिवास ढाढ़ा, कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. ए.के. छबड़ा सहित विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक एवं क्षेत्र के किसानों ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम के समाप्ति अवसर पर सभी किसानों व अन्य मौजूद लोगों को पौधे वितरित किए गए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
५१८८८ मार्केट	७.६.२१	२	१-२

पूर्व कीट वैज्ञानिक प्रो. राम सिंह को किया जेसी भारद्वाज स्मृति पुरस्कार-२०२१ से सम्मानित

हिसार | हक्कावि के मानव संसाधन को अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। प्रबंधन बोर्ड में तकनीकी सलाहकार देश और विदेश के मंचों से उन्होंने और कीट संबोधन दिया है। प्रो. रामसिंह ने वैज्ञानिक रहे पौध संरक्षण से संबंधित विषयों पर प्रो. रामसिंह को 8 पुस्तकें लिखी हैं। इनके अलावा जेसी भारद्वाज 21 सौ अधिक कृषि स्नातकों स्मृति पुरस्कार को मार्गदर्शन दिया है। हिसार के से सम्मानित साहित्यकार एवं कवि नरेश शर्मा ने बधाई देते हुए कहा कि रिटायरमेंट के बाद भी जीव विभाग के क्षेत्र में प्रो. राम सिंह से सलाह मिलवा किया जाता है, जो हिसार के लिए गौरव की आत है।





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	6.06.21	---	

हरियाणा की आवाज़

उत्तर किस्मों के विकास के साथ जल संरक्षण एवं खरपतवार प्रबंधन समय की मांग : काम्बोज



हिस्पत(एस.जैन)। वर्तमान समय की भागीदारिक परिस्थितियों और जलवायु परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए, वैज्ञानिक जल संरक्षण और खरपतवार प्रबंधन पर विशेष ध्यान दें। साथ ही विभिन्न फसलों की पैदावार बढ़ाने के लिए किसान हितेषी आधिकारिक तकनीकों का विकास करें ये बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर डॉ. आर. काम्बोज ने कहा। वे विश्वविद्यालय के अनुवासीकों एवं पौध प्रजनन विभाग के दलहन अनुभाव के अनुसंधान थेट्र का दौरा करने के ऊर्यत वैज्ञानिकों से रुबरू हो रहे थे। इस दौरान उन्होंने बस्ति एवं ग्रीष्मकालीन मूँग की विभिन्न किसियों के प्रयोगों का भी अवलोकन किया। कुलपति ने मूँग की ऊर्यत किस्मों को विकसित करने के लिए विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों की सहायता करते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन और मिट्टी की समस्याओं से

निपटने के लिए मूँगबीन प्रजनन कार्यक्रम को और बड़ने के लिए जर्मेन्टाइम में विभिन्न प्रकार के जीनोटाइप का उपयोग किया जा सकता है। इसके अलावा उन्होंने बेहतर उपादान के लिए अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण को प्रभावी ढंग से अपनाए पर भी जार दिया और टीम को खरपतवार प्रबंधन, कीट नियंत्रण और जल बचत की आधुनिक तकनीकों के उपयोग की सलाह दी। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे फॉर्लॉड में किसानों के सामने आने वाली समस्याओं के समाधान व उनकी आय में बढ़ोतारी को ध्यान में रखकर शोध कार्यों को आगे बढ़ाए। कुलपति प्रोफेसर डॉ. आर. काम्बोज ने बताया कि विश्वविद्यालय में भारत के मूँग-प्रजनन के प्रमुख केंद्रों में से एक केंद्र है, जिसे मूँग की उच्च उपज देने वाली किसियों के विकास में उत्कृष्ट योगदान के लिए सर्वश्रेष्ठ केंद्र का पुरस्कार मिल चुका

है। यह भारत के माननीय उपराष्ट्रपति एम वेंकेया नायडू द्वारा प्रदान किया गया। वैज्ञानिकों ने अब तक अपने अधिक प्रयोगों से दलहनी फसलों की 33 किसियों का विकास किया है। इन किसियों में विभिन्न मौसम के अनुसार खेतों के लिए मूँग की छह उच्च उपज देने वाली रोग प्रतिरोधी विस्में आशा, मुस्कान, सल्ल, बसंती, एमएच 421 और एमएच 318 शामिल हैं। ये किसी रोज़ के साथ-साथ देश भर में भी अत्यधिक लोकप्रिय हैं। कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता एवं आनुवांशिकी और पादप प्रजनन विभाग के अध्यक्ष डॉ. ए.के. छावड़ा ने कुलपति का स्वागत किया और दलहन अनुसंधान फार्म में चल रहे विभिन्न ग्रीष्म/वसंत मूँग अनुसंधान परीक्षणों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मूँग की एमएच 421 किसम वर्तमान में देश की सबसे लोकप्रिय किसिय है, जो देश के कुल मूँग थेट्र के लगभग 23-24 प्रतिशत थेट्र को कवर करती है। डॉ.जन उपादान रिकार्ड के अनुसार अब यह किसम भारत में विभिन्न मौसियों में 10 लाख हेक्टेयर थेट्र में उत्पाद जाती है। इस किसिय के अने के बाद देश के विभिन्न हिस्सों मुख्य रूप से गरजस्थान में मूँग के थेट्र के साथ-साथ उपादान में भी बढ़ोतारी हुई है और देश में दलों का कुल उपादान बढ़ा है। डॉ. राजश यादव ने मूँग प्रजनन कार्यक्रम के विभिन्न प्रयोगों, प्रजनन समाप्ति और उत्पाद जीनोटाइप के बारे में बताया। इस अवसर पर अनुसंधान निदेशक डॉ. एस.के. सहायत, सहायक अनुसंधान निदेशक डॉ. नीरज, प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. सतीश खोल्ला सहित दलहन विभाग अनुभाग के संकाय सदस्य भी उपस्थित थे।